Shodh Sari-An International Multidisciplinary Journal

@2025 International Council for Education Research and Training
2025, Vol. 04, Issue 01, 111-117
ISSN: 2959-1376
DOI: https://doi.org/10.59231/SARI7782

भारतीय शिक्षण नीतियों के बदलते स्वरूप का मूल्यांकन

चौहान, तपस्या

असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, डॉ0 भीमराव आंबेडकर विश्वविद्यालय, आगरा (उ0प्र0)

सार

शिक्षा व्यक्तित्व विकास, नैतिक मूल्यों तथा शुद्ध अभिवृत्ति विकसित कर राष्ट्र निर्माण हेतु आदर्श नागरिक भारत को प्रदान करने का प्रयत्न करती है। यह प्रयत्न अनेक प्रणाली व शिक्षण पद्धतियों को आधार बनाकर शिक्षा व्यवस्था में यथासंभव परिवर्तन द्वारा ही संभव है। भारत में वैदिक कालीन शिक्षण प्रणाली वेद-मंत्रों को कण्ठस्थ करना, हवन-यज्ञ इत्यादि धार्मिक कार्यों द्वारा मोक्ष प्राप्ति के लक्ष्य को साधती है। वर्तमान समय में जिस प्रकार व्याख्यान दिए जाते हैं उसी प्रकार ऋषि मुनियों द्वारा धर्म संबंधी क्रिया कलापों की मौखिक रूप से शिष्यों को संप्रेषित किया जाता रहा। इसके पश्चात् गुरुकुल शिक्षा प्रणाली द्वारा शिक्षा के साथ-साथ कौशल जैसे-तलवारबाजी, भाला फेंकना, धनुष विद्या जैसी अस्त्र-शस्त्र ज्ञान व शास्त्रज्ञान राज-बालकों को प्रदान किया जाने लगा। समय के साथ परिस्थिति विशेष में अनेक सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक घटनाओं के साथ भारत में अंग्रेजों के आने पर स्वार्थ सिद्धि हेतु अपंग शिक्षण प्रणाली जिसमें भारतीयता के स्थान पर लाभ कमाने का उद्देश्य मात्र ही दृष्टिगत होता है फिर भी भारत में लागू की गई। स्वतंत्र भारत में जब पहली राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू की गई तो भारतीय विचारकों ने प्रयास किया कि यह छात्र हित में हो तथा शिक्षा सभी तक पहुँचे। दूसरी शिक्षा नीति प्रथम शिक्षा नीति का ही संवर्धित रूप कहा जा सकता है। दोनों ही शिक्षा पद्धति शिक्षक केन्द्रित रहीं किन्तु नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 छात्र केन्द्रित है जिसमें विषय बद्धता न होकर छात्र की रुचि व कौशल को स्वातंत्र्य प्रदान किया है। प्रस्तुत शोध पत्र में भारतीय शिक्षण नीतियों के बदलते स्वरूप का मूल्यांकन छात्र, शिक्षक व पाठ्यक्रम को ध्यान में रखकर किया जाएगा। शोध-पत्र में विवरणात्मक वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक एवं अन्वेषणात्मक शोध पद्धति का प्रयोग कर निष्कर्ष तक पहुंचा जायेगा।

@2025 International Council for Education Research and Training 2025, Vol. 04, Issue 01, 111-117
ISSN: 2959-1376 DOI: https://doi.org/10.59231/SARI7782

बीज शब्द - शिक्षण, अर्थवत्ता, गुणात्मक एवं ऋणात्मक, नीति, प्रणाली, अभिवृत्ति, प्रतिमान, विश्लेषण, परिधि, मूल्य, प्रतिस्पर्धा, अन्तर्द्वंद, अधिगम, विकल्प, अधिगमकर्त्ता संवर्द्धन, आत्मसातीकरण, विभेद, निजीकरण, बाजारवाद, अवबोधन, मनोवृत्ति आदि।

अध्ययन का उद्देश्य

शोध पत्र के द्वारा प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति अथवा नीति से लेकर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 तक शिक्षण प्रणाली के परिवर्तित स्वरूप का मूल्यांकन कर शिक्षा के विकास क्रम को उल्लेखित किया जायेगा। भारतीय शिक्षण नीतियों में समय-समय पर जो भी परिवर्तन किये गये हैं उनका विश्लेषण कर शिक्षा के क्षेत्र में आये बदलाव को बिन्दुवार प्रस्तुत कर उनके सकारात्मक तथ्यों के साथ चुनौतियों को इंगित करते हुए सार्थक व सटीक निष्कर्ष तक पहंुचने का प्रयास किया जायेगा। यह निष्कर्ष शिक्षक, शिक्षार्थी व पाठ्यक्रम तीनों के अन्तर्सबंधों की व्याख्या करते हुए भारतीय शिक्षण पद्धति के गौरवमयी इतिहास की भी व्याख्या प्रस्तुत करेगा।

प्रस्तावना

भारतीय शिक्षण पद्धति प्राचीन काल से ही स्वयं में सार्थक व शिक्षार्थी के हितार्थ रही है। इसकी गौरवगाथा का परिचय वैदिक युग से ही समझा जा सकता है। हाँ! यह सत्यता अवश्य है कि उस समय शिक्षा का मूल उद्देश्य मोक्ष प्राप्ति रहा है। मोक्ष प्राप्ति का माध्यम हवन, यज्ञ आदि संस्कार थे। इस समय की मुख्य विशेषता निःस्वार्थ निःशुल्क शिक्षा थी। वस्तुतः शिक्षा मानव के आचार-विचार के स्तर को विकसित कर नवोदय के धरातल को पुष्ट करती है। जो राष्ट्र व समाज हित के कार्यो को रूपायित करने के लिए संजीवनी है। जिस प्रकार भोजन वस्त्र और आवास जीवनयापन के मुख्य आधार है उसी प्रकार शिक्षा भी महत्वपूर्ण तत्व है मानव जीवन का। सभ्य समाज की नींव शिक्षा से ही है इसके अतिरिक्त शिक्षा जीविकोपार्जन का महत्वपूर्ण साधन बन बैठा है। वैदिक कालीन शिक्षा और वर्तमान शिक्षण प्रणाली में पर्याप्त अंतर है। वैसे शिक्षा औपचारिक व अनौपचारिक दोनों रूप से प्राप्त की जाती रही है। सामान्यतः शिक्षा प्राप्ति हेतु औपचारिक रूप से गुरुकुल और वर्तमान में विद्यालयों में शिक्षा अर्जन हेतु प्रवेश लिया जाता रहा है किन्तु अनौपचारिक शिक्षा प्राप्ति के लिए किसी भी पाठ्यक्रम, शिक्षण संस्थान, शिक्षक की आवश्यकता नहीं होती। अनौपचारिक शिक्षा वह है जो समाज, परिवेश तथा परस्थितियों से प्राप्त अनुभव द्वारा ग्रहण की जाती है किन्तु यह शिक्षा सकारात्मक प्रभाव डालेगी या

@2025 International Council for Education Research and Training
ISSN: 2959-1376
2025, Vol. 04, Issue 01, 111-117
DOI: https://doi.org/10.59231/SARI7782

नकारात्मक यह तो सदैव संदेहास्पद रहता है क्योंकि अनुभव व्यक्ति अथवा बालक स्वयं के बुद्धि-विवेक से आंकलन कर उससे आत्मसात करता है। यहाँ दिशा-निर्देश व मार्गदर्शक की अनुपस्थिति छात्र के अनुभव में भटकाव उत्पन्न कर सकती है। परिणामस्वरूप वह विकल्पों के घेरे में बंध कर उचित अनुचित में विभेद में असमर्थता तथा जीवन के कटु अनुभवों के कारण राष्ट्रोन्नति में बाधक बन सकता है। यही कारण है कि अनौपचारिक अनुभवजन्य शिक्षा की अपेक्षा औपचारिक शिक्षा द्वारा बाल्याकाल से ही सही मार्गदर्शन व दिशा निर्देश द्वारा बालकों को भविष्योंन्नमुखी राष्ट्रोन्नति हेतु तैयार किया जाता है।

शिक्षा का केन्द्र बिन्दु छात्र है तथा शिक्षा के प्रमुख घटक शिक्षक-शिक्षार्थी-पाठ्यक्रम है। शिक्षक पाठ्यक्रम के अनुरूप शिक्षा प्रदान करने हेतु विविध शिक्षण सामग्री का प्रयोग कर अधिगम को सरल-सुगम बनाकर छात्रों को शिक्षित एवं प्रशिक्षित करता है। शिक्षक का कार्य पाठ्यक्रम का संपूर्ण ज्ञान छात्रों तक पहंुचाना मात्र नहीं है अपितु वह छात्र के भीतर की प्रतिभा को बाहर निकालने हेतु अनेक उपायों का प्रयोग करता है जिससे प्रतिभा सम्पन्न छात्रों को उचित मार्गदर्शन देकर उन्हें राष्ट्रहित में योगदान देने के लिए तैयार किया जा सके। इन सभी बातों को छात्रों के हित में ध्यान में रखते हुए शिक्षण पद्धति अथवा नीतियों का निर्माण किया जाता है जिससे छात्रों का सर्वांगीण विकास किया जा सके। प्राचीन शिक्षण पद्धति में छात्रों को गुरुकुल में प्रशिक्षित किया जाता था। उस समय के नियम आज की शिक्षा नीतियों से भिन्न अवश्य हैं किन्तु भारतीय परम्परित शिक्षण प्रणाली आज भी जीवित है क्योंकि उस समय की नीति को वर्तमान से जोड़ने का प्रयास करती है हमारी राष्ट्रीय शिक्षा नीति यह सिद्ध करने हेतु भारतीय शिक्षा पद्धति के विकासक्रम व उसके परिवर्तित रूप के मूल्यांकन द्वारा प्राप्त निष्कर्ष सिद्ध करेंगे प्राचीन शिक्षण पद्धति और राष्ट्रीय शिक्षा नीति के मध्य अंर्तसंबंध।

मुख्य-पत्र

सामान्यतः स्वतंत्रता के पश्चात् राष्ट्रीय शिक्षण नीति को भारत में लागू किया गया। किन्तु भारत में शिक्षा प्राचीन काल से ही विश्व विख्यात रही है। रण-कौशल हो या शास्त्रार्थ, सभी क्षेत्रों में भारतीय शिक्षा के प्रति आकर्षण रहा। यहां की वास्तुकला भी अपने आप में विलक्षण है। वर्षों पूर्व बनायी गयी इमारतें आज भी सुरक्षित हैं और आकर्षण का केन्द्र स्थल बनी हुई हैं। शिक्षण पद्धतियों के बदलते स्वरूप को विश्लेषित करने से पूर्व भारतीय शिक्षण पद्धति के प्राचीन रूप का विहंगावलोकन करना अनिवार्य है, इसलिए

@2025 International Council for Education Research and Training
ISSN: 2959-1376
2025, Vol. 04, Issue 01, 111-117
DOI: https://doi.org/10.59231/SARI7782

वैदिक कालीन शिक्षण पद्धति अथवा नीति को संक्षेप में प्रस्तुत किया जा रहा है।

वैदिक शिक्षा प्रणाली

संपूर्ण राष्ट्रोन्नति हेतु सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक व राजनैतिक पक्षों को पुष्ट करने के लिए मजबूत शिक्षा तंत्र की आवश्यकता रहती है। जो वैदिक काल से ही विश्व में अपनी गरिमामयी उपस्थिति दर्ज करा रहा है। वैदिककाल में शिक्षा पुस्तकालयी ज्ञान की अपेक्षा वेद मंत्रों को कंठस्थ करना, हवन-यज्ञ करने के पक्ष में अधिक रही। वैदिक शिक्षा वह पद्धति है ‘‘जो पूर्व वैदिक काल में प्रारंभ हुई और लगभग 550 ई0 (गुप्त साम्राज्य के पतन तक) विकसित होती रही। इसे ब्राह्मण शिक्षा पद्धति, शिक्षा की हिंदू प्रणाली और शिक्षा की गुरुकुल प्रणाली भी कहा जाता है। जैन और बौद्ध धर्मों ने लगभग 5वीं शताब्दी ई0पू0 से शिक्षा की अपनी प्रणालियां विकसित की वे कुछ अर्थो में वैदिक प्रणाली से अलग है लेकिन कई प्रकार से वैदिक शिक्षा के समान ही हैं।1 वस्तुतः वैदिक शिक्षा प्रणाली के अंतर्गत छात्र गुरुकुल जाकर शिक्षा ग्रहण करता। वह गुरुकुल में रहकर वहाँ के नियमों व नीतियों का पालन किया करता। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली लगभग 2500 वर्षों तक निरंतर चलती रही। वैदिक कालीन शिक्षा पराविद्या जो मोक्ष प्राप्ति के लिए होती थी और अपरा विद्या व्यवहारिक आदर्शों को पुष्ट करती थी; दो भागों में विभक्त थी। उस समय शिक्षा का उद्देश्य मोक्ष प्राप्ति मात्र नहीं था। उसके उद्देश्य निम्नवत् हैं-

वैदिक शिक्षा के उद्देश्य

चरित्र निर्माण करना- छात्र के व्यक्तित्व निर्माण तथा चारीत्रिक शुद्धता गुरुकुल शिक्षण पद्धति की मुख्य विशेषता रही है।

संयम- आत्म संयम द्वारा परिस्थितियों के प्रति संवेदनशील होते हुए निर्णायक क्षमता को विकसित किया जाता था।

आचरण- आदर्श गुणों के विकास से ही समाज व राष्ट्र की उन्नति संभव है। इसलिए आचरण शुद्धि हेतु कठोर नियम भी थे।

सत्य- भारतीय पंरपरा सत्यं, शिवं, सुंदरम, पर आधारित है इसलिए सत्यवादिता को प्रमुखता दी गई।

शांत व सरल स्वभाव- प्रत्येक परिस्थिति में शांत व सरल व्यवहार करना सिखाया जाता जिससे वह जीवन के प्रत्येक पहलू में धैर्य धारण कर सके।

संस्कृति के प्रति निष्ठावान- संस्कृति- संरक्षण वैदिक कालीन शिक्षण पद्धति का प्रमुख उद्देश्य रहा है।

@2025 International Council for Education Research and Training
ISSN: 2959-1376
2025, Vol. 04, Issue 01, 111-117
DOI: https://doi.org/10.59231/SARI7782

ब्रह्मचर्य का पालन- छात्र गुरुकुल में 25 वर्ष की आयु तक ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए उच्च शिक्षा ग्रहण करता था।

कर्त्तव्य बोध- छात्र को गुरुकुल में ही सामाजिक, राजनैतिक व धार्मिक कर्त्तव्यों का बोध कराया जाता जिससे वह भविष्य में राष्ट्रोन्नति में सहायक सिद्ध हों।

अतः छात्र के सर्वांगीण विकास को ध्यान में रखकर गुरुकुल शिक्षण पद्धति के नियम बनाये गये। -''वेद मानव सभ्यता के लगभग सर्वाधिक पुराने दस्तावेज हैं। ऋग्वेद में खगोल विज्ञान से संबंधित 30 श्लोक हैं। यजुर्वेद में 44 तथा अथर्ववेद में 162 श्लोक हैं। हजारों वर्ष पूर्व ऋषि भारद्वाज ने विमानशास्त्र लिखा था जिसमें हवाई जहाज बनाने की तकनीकि का वर्णन मिलता है।''2 जिससे यह तो स्पष्ट है कि विज्ञान तथा तकनीकि के क्षेत्र में भी वैदिक शिक्षा अग्रणी रही है। इसलिए प्राचीन भारतीय शिक्षण प्रणाली को विश्वस्तरीय शिक्षा पद्धति का गौरव प्राप्त है।

स्वतंत्र भारत में शिक्षा: सन् 1947 में स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् शिक्षण पद्धति भारतीयता विहीन प्रतीत हुई। क्योंकि अंग्रेजी शासन में शिक्षा का मूल उद्देश्य राज भक्ति था। इसलिए शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी बन गया। ''स्वतंत्र भारत में बहुभाषिकता को बढ़ावा देने के लिए 'त्रिभाषा सूत्र'' लाया गया। इसका उद्देश्य था कि प्रत्येक विद्यार्थी अपनी मातृभाषा के अतिरिक्त दो भाषाएं जान सके। यद्यपि यह सूत्र भारतीय भाषाओं के प्रोत्साहन के लिए था, लेकिन इसका क्रियान्वयन इस तरह से हुआ कि यह संपर्क भाषा के रूप में अंग्रेजी की स्वीकार्यता और अनिवार्यता का सूत्र बन गया।''3 त्रिभाषा सूत्र राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1968 के प्रमुख सिद्धांतों में से एक था।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-1968

सन् 1968 शिक्षा को व्यवस्थित रूप प्रदान करने के लिए सन् 1968 में माध्यमिक शिक्षा आयोग (सन् 1952 में गठित किया गया) के अध्यक्ष तथा शिक्षा आयोग (सन् 1964 में गठित) दौलत सिंह कोठारी (अध्यक्ष) ने शिक्षा नीति का प्रस्ताव रखा।

इसका मुख्य उद्देश्य शिक्षा को राष्ट्रीय स्तर प्रदान करना था। इस कार्य में इंदिरा गांधी ने अहम भूमिका निभाई। इसके अंतर्गत 6 प्रतिशत व्यय केन्द्रीय बजट द्वारा किया जाना लक्षित किया साथ ही 14 वर्ष तक के बच्चों के लिए शिक्षा अनिवार्य कर दी गई। 10+2+3 की प्रणाली को सम्पूर्ण राष्ट्र में लागू किया।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं संशोधन 1992

सन् 1968 में राष्ट्रीय शिक्षा नीति देश की शैक्षिक व्यवस्था हेतु एक महत्वपूर्ण कदम था। यह संपूर्ण भारत में लागू की जा रही थी। ''सन् 1977 के केन्द्र

@2025 International Council for Education Research and Training
ISSN: 2959-1376
2025, Vol. 04, Issue 01, 111-117
DOI: https://doi.org/10.59231/SARI7782

में जनता पार्टी की सरकार बनाने पर 10+2+3 शिक्षा संरचना के स्थान पर 8+4+3 शिक्षा संरचना का विचार आया जिसके परिणामस्वरूप कुछ शिक्षाविदों व सांसदों के सहयोग ने तत्कालीन केन्द्रीय शिक्षा मंत्री श्री प्रतापचंद्र ने एक नई शिक्षा नीति 1979 की घोषणा कर दी। इसे अभी लागू भी नहीं किया गया था कि 1980 में पुनः कांग्रेस सत्ता में आ गई पुनः राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1968 के अनुपालन पर जोर दिया।''4 राजीव गांधी के प्रधानमंत्री बनने के पश्चात् शिक्षा के क्षेत्र में सर्वेक्षण कराया और इसे Challenge of Education : A Policy Perspective नाम से सन् 1983 में प्रकाशित करावाया। इसमें सन् 1951-1983 तक की शिक्षा की यात्रा का विवरण था। विश्वव्यापी बहस व सुझावों के पश्चात् केन्द्रीय सरकार द्वारा संसद में 1986 में यह प्रस्तावित करने के बाद मई 1986 में लागू की गई। सन् 1992 में इसमें संशोधन किया गया। जिसके अन्तर्गत साक्षरता अभियान, राष्ट्रीय साक्षरता मिशन, व्यवसायिक कौशल एवं प्रशिक्षण, 14 वर्ष तक के बालकों को निःशुल्क शिक्षा प्रदान करने का उद्देश्य लक्षित किया गया।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020

केन्द्र सरकार द्वारा 29 जुलाई 2020 को लागू की गई। शिक्षा की गुणवत्ता के बढ़ाने हेतु 5+3+3+4 व्यवस्था लागू की गई। जिसके अंतर्गत फाउंडेशन स्टेज में 3-8 साल तक के बच्चे, प्रोपटरी स्टेज में 8-11 वर्ष के बच्चे, मध्य स्टेज जिसमें कक्षा 6-8 तक के बच्चे सेकेंडरी स्टेज जिसमें कक्षा 9-12 तक के बच्चे सम्मिलित किये गये हैं। ''राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली के समान भारत केन्द्रित पूर्वी शिक्षा प्रणाली को वापस लाने की कल्पना करती है। जो उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा सुनिश्चित करती है।''5 इसके प्रमुख उद्देश्य सभी तक शिक्षा पहंुचाना, विश्वस्तरीय ज्ञान, छात्रों का कौशल विकास रचनात्मक मूल्यांकन विधि, विषय समझ विकसित करना आदि है।

मूल्यांकन

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को प्राचीन भारतीय शिक्षण पद्धति का विकसित रूप उसकी संरचना व उद्देश्यों के आधार पर कहा जा सकता है किन्तु प्राचीन भारतीय शिक्षण प्रणाली के केन्द्र में शिक्षक/गुरु था जबकि वर्तमान शिक्षण प्रणाली छात्र केन्द्रित है।

निष्कर्ष

भारतीय शिक्षा व्यवस्था प्राचीन काल से ही सुव्यवस्थित व विश्वस्तरीय रही है किन्तु अंग्रेजी शासन में राजभक्ति हेतु अंग्रेजी शिक्षा की जहरीली जड़ों ने भारतीयता को गिरफ्त में ले रखा था। एक

@2025 International Council for Education Research and Training
ISSN: 2959-1376
2025, Vol. 04, Issue 01, 111-117
DOI: https://doi.org/10.59231/SARI7782

लम्बे समय के बाद राष्ट्रीय शिक्षा नीतियां स्वतंत्र भारत में लागू हुई। उसके पश्चात् वर्तमान राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 प्राचीन शिक्षण पद्धति को आधार बनाकर गठित हुई हैं तथा इस शिक्षा नीति के मूल उद्देश्य भी वहीं हैं जो वैदिक कालीन शिक्षा के हुआ करते थे।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 एक क्रांतिकारी पहल: संपादक- डा0 ममता सिंह एवं डॉ. चेतना पोखरियाल: सत्यम पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली ; सं- 2021, पृ0 110.

2. भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 एक क्रांतिकारी पहल: संपादक- डा0 ममता सिंह एवं डॉ. चेतना पोखरियाल: सत्यम पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली ; सं- 2021, पृ0 114.

3. राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 भारतयीता का पुनरुत्थान: संपादक- अतुल कोठारी: प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली: सं.-2022, पृ 29.

4. Chavada, J. K. (2024). The role of teacher has changed in the context of classroom education in the 21st century. *Shodh Sari-An International Multidisciplinary Journal*, *03*(01), 66–70. https://doi.org/10.59231/sari7655

5. Bhagoji, M. D. (2024a). Navigating Global Dynamics in Teacher Education: A Comprehensive Overview. *Shodh Sari-An International Multidisciplinary Journal*, *03*(01), 123–133. https://doi.org/10.59231/sari7660

6. Kumar, N. (2024). A Critical Study of Provisions Related to School Education with Special Reference to National Education Policy 2020. *Shodh Sari-An International Multidisciplinary Journal*, *03*(01), 267–274. https://doi.org/10.59231/sari7670

Received on Aug 10, 2024

Accepted on Oct 05, 2024

Published on Jan 01, 2025

भारतीय शिक्षण नीतियों के बदलते स्वरूप का मूल्यांकन © 2025 by तपस्या चौहान is licensed under CC BY-NC-ND 4.0